CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हनुमान चालीसा

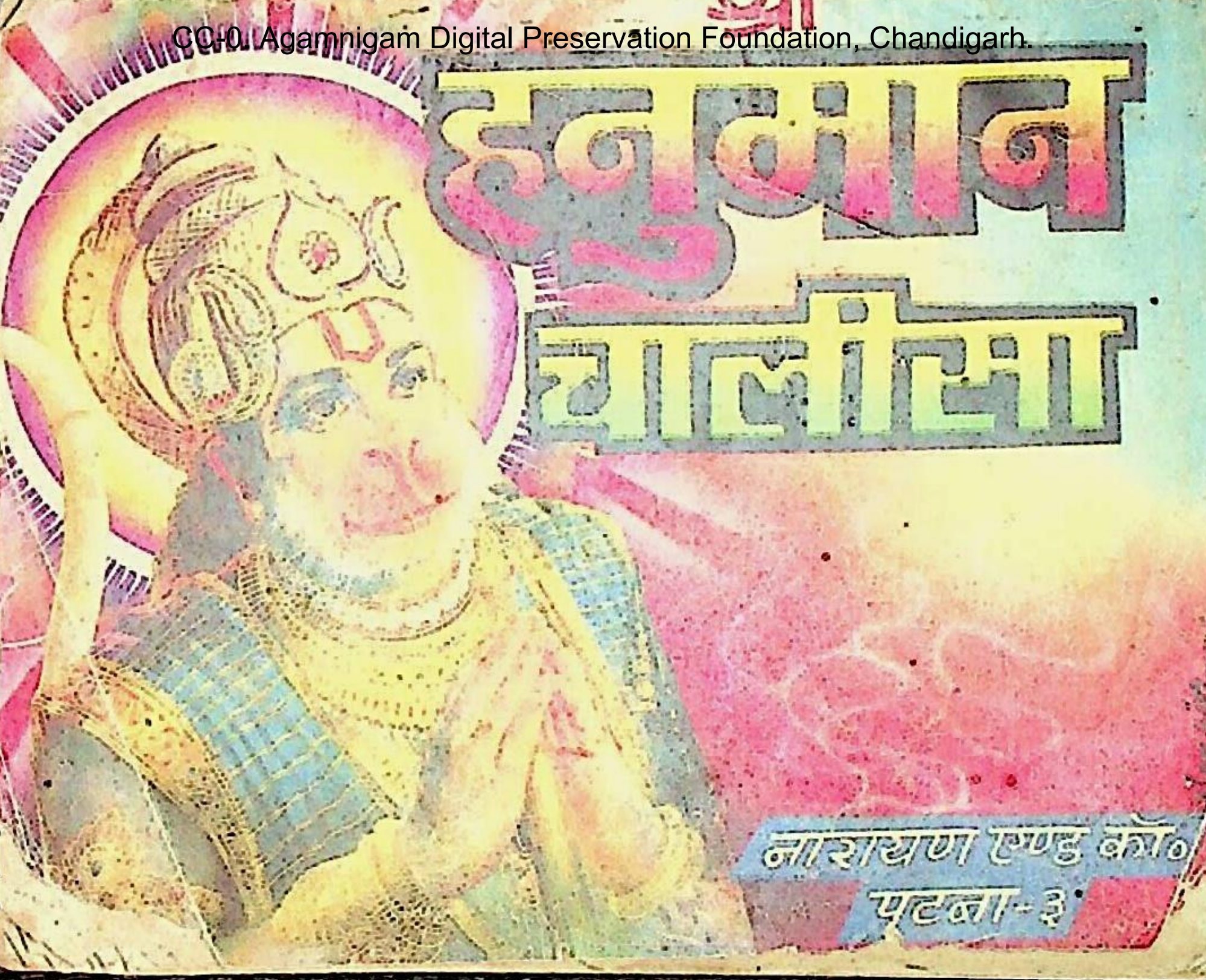

नारायण एण्ड कं०
पटना-३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री हनुमान चालीसा

संकटमोचन हनुमानाष्टक, हनुमानजी की आरती, श्रीराम स्तुति, श्रीरामावतार, बजरंगबाण, श्रीरामाष्टक, जगदीश हरे की आरती, स्तुति श्री हनुमानजी की, श्रीराम वंदना ।

प्रभावशाली तांत्रिक हनुमान यंत्र पूजन की विधि सहित

प्रकाशक :

नारायण एण्ड को० बुकसेलर्स

सालिमपुर अहरा, पटना–३

दूरभाष : ६५५७०२

[मूल्य – ३ रुपये

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभावकारी तान्त्रिक हनुमान यन्त्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तान्त्रिक पूजन-विधि

प्रातः स्नान करके, लाल वस्त्र पहन कर हनुमान जी की मूर्ति तथा पुस्तक में बने यन्त्र को (भोजपत्र या ताम्रपत्र पर खुदवाकर) सामने रखकर पूजन करना चाहिये। सिन्दूर या सिमरक, चावल, लाल पुष्प, धूप, अगरबत्ती और दीप प्रज्वलित करके पूजन करें। यथाशक्ति मोतीचूर (बून्दी) बेसन के लड्डू का भोग लगावें। फिर पुष्प हाथ में लेकर नीचे लिखे श्लोक को पढ़ें।

अतुलित बलधामं हेम शैलाभदेहं, दनुज-वन कृशानुं ज्ञानिनामाग्र गण्यम्।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशं, रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

इस प्रकार पुष्प समर्पण करके, मन में हनुमानजी का ध्यान करते हुए हनुमान चालीसा का पाठ करें। अन्त में लाल चन्दन की माला से "हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्" का १०८ बार नित्य जाप करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

卐 श्रीहनुमते नमः 卐

हनुमान चालीसा, संकटमोचन, हनुमानाष्टक, हनुमानजी की आरती, श्रीराम स्तुति, श्री रामावतार, बजरंग बाण, श्रीरामाष्टक, जगदीश हरे की आरती, स्तुति श्रीहनुमानजी की, श्रीराम वंदना ।

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

卐 चौपाई 卐

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन विराज सुवेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केशरीनन्दन ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे ।
रामचन्द्र के काज संवारे ॥
लाय संजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जश गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
यम कुबेर दिग्पाल जहाँ ते ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना ।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
युग सहस्त्र जोजन पर भानू ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक ते काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस वर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

卐 दोहा 卐

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ।
देवन आनि करी विनती तब, छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो ॥१॥
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो ।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो, तुम दास के शोक निवारो ॥२॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंगद को संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौं हम सों जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब, लाय सिया सुधि प्रान उबारो ॥३॥
रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय अशोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ॥४॥
बान लग्यो उर लछि न के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।
आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्राण उबारो ॥५॥
रावन जुद्ध जु आन कियो तब, नाग की फाँस सबै सिर डारो ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो ॥६॥
बन्धु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहि पूजि भलि विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मन्त्र बिचारो ॥
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ॥७॥
काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसो नहिं जात है टारो ॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु ! जो कुछ संकट होय हमारो ॥८॥

दो०-- लाल देह लाली लसे, अरुधरि लाल लंगूर ।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

卐 श्री हनुमान जी की आरती 卐

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जाके बल से गिरिवर काँपै, रोग दोष भय निकट न झाँके ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवन सुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर सँहारे, सियारामजी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, आनि संजीवन प्राण उबारे ।
पैठि पताल तोरि जमकारे, अहिरावन के भुजा उखारे ॥
बायें भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा सन्त जन तारे ।
सुर नर मुनि जन आरती उतारें, जै-जै-जै हनुमानजी उचारें ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरती करत अंजना माई ।
जो हनुमानजी की आरती गावै, सो बैकुण्ठ अमरपद पावै ॥
लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास प्रभु कीरति गाई ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

卐 श्रीरामजी की स्तुति 卐

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकंज-लोचन कंज-मुख, कर कंज पद कंजारुणं ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनील-नीरद सुन्दरं ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द दशरथ-नन्दनं ॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।
आजानु भुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु कामादि-खलदल गंजनं ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो ।
करुणा निधान सुजान सीलु सनेह जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषी अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

सोरठा- जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जात कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥

卐 सियावर रामचन्द्र की जय. 卐

卐 श्रीरामावतार 卐

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि-मनहारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनु-घनश्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषन वनमाला नयन बिसाला शोभा सिंधु खरारी ॥१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कह दुइ कर जोरी स्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥
करुना सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रकट भयउ श्रीकंता ॥२॥
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
सो मम उरवासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥३॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

卐 बजरंग बाण 卐

दोहा– निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करें सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी । सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज बिलम्ब न कीजै । आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिन्धु महिपारा । सुरसा बदन पैठि विस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुरलोका ॥
जाय विभीषन को सुख दीन्हा । सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा । अति आतुर जमकातर तोरा ॥
अक्षय कुमार मारि संहारा । लूम लपेट लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर में भई ॥
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी । कृपा करहु उर अन्तर्यामी ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जय जय लखन प्राण के दाता । आतुर होई दुख करहु निपाता ॥
जै गिरिधर जै जै सुख सागर । सुर समूह समरथ भटनागर ॥
ऊँ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले । बैरिहि मारु वज्र की कीले ॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो । महाराज प्रभु दास उबारो ॥
ॐकार हुँकार महाप्रभु धावो । बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
ऊँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा । ऊँ हुँ हुँ हुँ हनु अरि उर शीशा ॥
सत्य होहु हरि शपथ पायके । राम दूत धरु मारु जायके ।
जय जय जय हनुमंत अगाधा । दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा । नहि जानत हौं दास तुम्हारा ॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं । तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पाँय परौं करजोरि मनावौं । यहि अवसर अबकेहि गोहरावौं ॥
जय अन्जनि कुमार वलवन्ता । शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर । अग्नि बैताल काल मारी मर ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की । राखउ नाथ मरजाद नाम की ॥
जनक सुता हरि दास कहावो । ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥
जै जै जै धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुख नाशा ॥
चरण शरण कर जोरि मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई । पाँय परौं कर जोरि मनाई ॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता । ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥
ॐ हँ हँ हाँक देत कपि चंचल । ॐ सं मं महमि पराने खल दल ॥
अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होय आनंद हमारो ॥
यहि बजरंग बाण जेहि मारै । ताहि कहो फिर कौन उबारे ॥
पाठ करै बजरंग बाण का । हनुमत रक्षा करैं प्राण का ॥
यह बजरंग बाण जो जापै । ताते भूत प्रेत सब काँपै ॥
धूप देय अरु जपै हमेशा । ताके तन नहिं रहै कलेशा ॥

दोहा– प्रेम प्रतीतिहि कपि भजैं, सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

卐 श्री रामाष्टकः प्रारम्भः 卐

हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणा केशवा ।
गोविन्दा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ॥
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ।
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम् ॥
आदौ रामतपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनम् ।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ॥
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदहनम् ।
पश्चाद्रावण कुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥

卐 आरती 卐

ओं जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ओं जय० ॥१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो ध्यावे फल पावे दुख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ॥ ओं जय०॥२॥
माता पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ॥ ओं जय०॥३॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ ओं जय०॥४॥
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्त्ता ।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्त्ता ॥ ओं जय०॥५॥
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपती ।
किस विधि मिलूँ गोसाईं तुमको मैं कुमती ॥ ओं जय०॥६॥
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥ ओं जय०॥७॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥ ओं जय०॥८॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

卐 स्तुति श्री हनुमान जी की 卐

हनुमान वीर तुम हो, संकट मिटाने वाले ।
दुःख शोक से छुड़ाकर, सुख के बढ़ाने वाले ॥टेक॥
जिसने तुम्हें है ध्याया, भवसिन्धु से तरा वह ।
दुखियों व आरतों को, तुम हो बचाने वाले ॥१॥
सुग्रीव ने शरण ली, जब आपके चरन की ।
तत्काल आ दुःखों से, उसको छुड़ाने वाले ॥२॥
सीता की सुधि लाये, सागर को पार करके ।
श्री रामचन्द्र जी की, धीरज बंधाने वाले ॥३॥
सीता अशोक बन में, अति शोक भोगती थीं ।
दे राम का संदेशा, उन्हें सुख पहुँचाने वाले ॥४॥
रावण का गर्व तोड़ा, लंका जला के उसकी ।
निर्भय सभा में जाकर, कौतुक दिखाने वाले ॥५॥
शक्ति से होके घायल, लक्ष्मण हुए थे बेसुध ।
बूटी संजीवनी ला, उनको बचाने वाले ॥६॥
श्री रामजी की सेवा, क्या-क्या न ही है तुमने ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सब संकटों से उनको, तुम थे छुड़ाने वाले ॥७॥
हो राम के सहाई, लंका फतेह कराई ।
विभीषण भक्त को तुम, थे राजा बनाने वाले ॥८॥
श्रीरामजी ने खुश हो, तुमको अमर किया है ।
उनकी दया से तुम हो, भव दुःख मिटाने वाले ॥९॥
परसराम की है विनती, मुझ पै भी कृपा कीजे ।
आओ मुझे बचाओ, जगको बचाने वाले ॥१०॥

卐 श्रीराम वन्दना 卐

आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं,
सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकाचारुचापं,
नमामि राममं रघुवंशनाथम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्व मनोकामना पूर्ण मन्त्र

आप सभी ओर से निराश हैं। भाग्य साथ नहीं देता, कामना पूर्ण होने में नहीं आती, तो इस मन्त्र का प्रयोग करें, उच्च अधिकारों को अपना बनाना, मन चाही वस्तु प्राप्त करना, किसी के मन की बात जान लेना, व्यापार में उन्नति, मुकदमे में विजय, कुश्ती, लाटरी घोड़े की दौड़ में विजय, स्त्री पुरुष का वशीकरण अपनी मन चाही मुराद की पूर्ति, बिछुड़े मित्रों से मुलाकात सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कीमत डाक खर्च सहित 50/ रुपये। इसके प्रयोग का असर 24 घण्टे में होने लगता है।

नारायण एण्ड को० बुक सेलर्स

198 सालिमपुर अहरा, पटना -3